उमामहेश्वरस्तोत्रम् (संस्कृत - ENGLISH), हिंदी अर्थ सहित

नमः शिवाभ्यां नवयौवनाभ्याम्
परस्पराश्लिष्टवपुर्धराभ्याम् ।
नगेन्द्रकन्यावृषकेतनाभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ १॥

namaḥ śivābhyāṁ navayauvanābhyām
parasparāśliṣṭavapurdharābhyām .
nagēndrakanyāvr̥ṣakētanābhyām
namō namaḥ śaṅkarapārvatībhyām .. 1..

नमः शिवाभ्यां सरसोत्सवाभ्याम्
नमस्कृताभीष्टवरप्रदाभ्याम् ।
नारायणेनार्चितपादुकाभ्यां
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ २॥

namaḥ śivābhyāṁ sarasōtsavābhyām
namaskr̥tābhīṣṭavarapradābhyām .
nārāyaṇēnārcitapādukābhyāṁ
namō namaḥ śaṅkarapārvatībhyām .. 2..

नमः शिवाभ्यां वृषवाहनाभ्याम्
विरिञ्चिविष्ण्विन्द्रसुपूजिताभ्याम् ।
विभूतिपाटीरविलेपनाभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ ३॥

namaḥ śivābhyāṁ vr̥ṣavāhanābhyām
viriñcaviṣṇvindrasupūjitābhyām .
vibhūtipāṭīravilēpanābhyām
namō namaḥ śaṅkarapārvatībhyām .. 3..

नमः शिवाभ्यां जगदीश्वराभ्याम्
जगत्पतिभ्यां जयविग्रहाभ्याम् ।
जम्भारिमुख्यैरभिवन्दिताभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ ४॥

namaḥ śivābhyāṁ jagadīśvarābhyām
jagatpatibhyāṁ jayavigrahābhyām .
jambhārimukhyairabhivanditābhyām
namō namaḥ śaṅkarapārvatībhyām .. 4..

नमः शिवाभ्यां परमौषधाभ्याम्
पञ्चाक्षरी पञ्जररञ्जिताभ्याम् ।
प्रपञ्चसृष्टिस्थिति संहृताभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ ५॥

namaḥ śivābhyāṁ paramauṣadhābhyām
pañcākṣarī pañjararañjitābhyām .
prapañcasr̥ṣṭisthiti saṁhr̥tābhyām
namō namaḥ śaṅkarapārvatībhyām .. 5..

नमः शिवाभ्यामतिसुन्दराभ्याम्
अत्यन्तमासक्तहृदम्बुजाभ्याम् ।
अशेषलोकैकहितङ्कराभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ ६॥

namaḥ śivābhyāmatisundarābhyām
atyantamāsaktahr̥dambujābhyām .
aśēṣalōkaikahitaṅkarābhyām
namō namaḥ śaṅkarapārvatībhyām .. 6..

नमः शिवाभ्यां कलिनाशनाभ्याम्
कङ्कालकल्याणवपुर्धराभ्याम् ।
कैलासशैलस्थितदेवताभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ ७॥

namaḥ śivābhyāṁ kalināśanābhyām
kaṅkālakalyāṇavapurdharābhyām .
kailāsaśailasthitadēvatābhyām
namō namaḥ śaṅkarapārvatībhyām .. 7..

नमः शिवाभ्यामशुभापहाभ्याम्
अशेषलोकैकविशेषिताभ्याम् ।

namaḥ śivābhyāmaśubhāpahābhyām
aśēṣalōkaikaviśēṣitābhyām .

अकुण्ठिताभ्याम् स्मृतिसम्भृताभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ ८॥

नमः शिवाभ्यां रथवाहनाभ्याम्
रवीन्दुवैश्वानरलोचनाभ्याम् ।
राकाशशाङ्काभमुखाम्बुजाभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ ९॥

नमः शिवाभ्यां जटिलन्धरभ्याम्
जरामृतिभ्यां च विवर्जिताभ्याम् ।
जनार्दनाब्जोद्भवपूजिताभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ १०॥

नमः शिवाभ्यां विषमेक्षणाभ्याम्
बिल्वच्छदामल्लिकदामभृद्भ्याम् ।
शोभावती शान्तवतीश्वराभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ ११॥

नमः शिवाभ्यां पशुपालकाभ्याम्
जगत्रयीरक्षण बद्धहृद्भ्याम् ।
समस्त देवासुरपूजिताभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ १२॥

स्तोत्रं त्रिसन्ध्यं शिवपार्वतीभ्याम्
भक्त्या पठेद्द्वादशकं नरो यः ।
स सर्वसौभाग्य फलानि भुङ्क्ते
शतायुरान्ते शिवलोकमेति ॥ १३॥

इति श्रीशङ्कराचार्यकृतम् उमामहेश्वरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीशैलेशभ्रमराम्बास्तुतिः

akuṇṭhitābhyām smṛtisambhṛtābhyām
namō namaḥ śaṅkarapārvatībhyām .. 8..

namaḥ śivābhyāṁ rathavāhanābhyām
ravīnduvaiśvānaralōcanābhyām .
rākāśaśāṅkābhamukhāmbujābhyām
namō namaḥ śaṅkarapārvatībhyām .. 9..

namaḥ śivābhyāṁ jaṭilandharabhyām
jarāmṛtibhyāṁ ca vivarjitābhyām .
janārdanābjōdbhavapūjitābhyām
namō namaḥ śaṅkarapārvatībhyām .. 10..

namaḥ śivābhyāṁ viṣamēkṣaṇābhyām
bilvacchadāmallikadāmabhṛdbhyām .
śōbhāvatī śāntavatīśvarābhyām
namō namaḥ śaṅkarapārvatībhyām .. 11..

namaḥ śivābhyāṁ paśupālakābhyām
jagatrayīrakṣaṇa baddhahṛdbhyām .
samasta dēvāsurapūjitābhyām
namō namaḥ śaṅkarapārvatībhyām .. 12..

stōtraṁ trisandhyaṁ śivapārvatībhyām
bhaktyā paṭhēddvādaśakaṁ narō yaḥ .
sa sarvasaubhāgya phalāni bhuṅktē
śatāyurāntē śivalōkamēti .. 13..

iti śrīśaṅkarācāryakṛtam umāmahēśvarastōtraṁ
sampūrṇam ..
śrīśailēśabhramarāmbāstutiḥ

द्वारा,
स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम,
बलुआघाट, जिला - चंदौली - वाराणसी (उत्तर प्रदेश) - 232109
***Mo. No.:** +91 -7607 233 230 ; **Email :** swamirupeshwar@gmail.com*

स्तोत्र हिंदी अर्थ

1. शिव और शिवा (उमा) को प्रणाम, जो शाश्वत युवा युगल हैं और एक दूसरे के शरीर को परस्पर आलिंगन में रखते हैं। मैं शंकर और पार्वती को बारम्बार प्रणाम करता हूँ, जिनमें से एक पर्वत की पुत्री है और दूसरे जिसका प्रतीक बैल है , भगवान शंकर और देवी पार्वती को नमस्कार है!

2. शिव और शिवा (उमा) को नमस्कार है, जिनके लिए हर्षोल्लास से उत्सव मनाए जाते हैं, जो याचकों की इच्छित वस्तुएँ प्रदान करते हैं और जिनके चरणों की पूजा नारायण करते हैं। भगवान शंकर और देवी पार्वती को सदैव नमस्कार है।

3. शिव और शिवा (उमा) को नमस्कार है, जो पवित्र वृषभ पर विराजमान हैं और जिनकी ब्रह्मा, विष्णु और इंद्र द्वारा भक्तिपूर्वक पूजा की जाती है। जो पवित्र राख और चंदन से लिपटे हुए हैं! आप दोनों को सदैव नमस्कार है।

4. भगवान शिव और देवी शिवा को नमस्कार है, जो ब्रह्माण्ड के स्वामी और स्वामिनी हैं, जो लोकों के अधिपति हैं, जो सफलता के स्वरूप हैं। जिनकी पूजा इंद्र और उनके प्रमुखों द्वारा की जाती है! आप दोनों को सदैव नमस्कार है।

5. भगवान शिव और देवी शिवा को नमस्कार है, जिनके अलावा कोई अन्य औषधि नहीं है (आत्मा की बीमारियों को ठीक करने के लिए)। वे पवित्र (नम: शिवाय) पंचाक्षरी को बार-बार सुनने से प्रसन्न होते हैं! वे ब्रह्मांड की रचना, पालन और संहार के लौकिक कर्मों के रचयिता हैं। मैं उन्हें बारम्बार नमस्कार करता हूँ।

6. भगवान शिव और देवी शिवा को नमस्कार है, जिनमें सौंदर्य की पराकाष्ठा है, तथा जिनके कमल-जैसे हृदय एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हैं। मैं भगवान शंकर और पार्वती को सदा-सर्वदा नमस्कार करता हूँ, जो सभी लोकों का कल्याण करते हैं।

7. शिव और शिवा (उमा) को प्रणाम करता हु, जो इस कलियुग की बुराइयों का नाश करते हैं। वे खोपड़ियों की माला और शुभता से चिह्नित रूप धारण करते हैं। मैं दिव्य युगल, कैलास के निवासी आपको बारम्बार नमस्कार करता हूँ।

8. भगवान शिव और देवी शिवा को नमस्कार है, जो सभी बुराइयों को दूर करते हैं, जो इस पूरे संसार में एकमात्र हैं, जिनकी शक्ति अबाधित है, जो स्मृतियों के अनुसरण से प्राप्त होते हैं। मैं भगवान शंकर और देवी पार्वती को नमस्कार करता हूँ।

9. भगवान शिव और देवी शिवा को नमस्कार है, जो दिव्य रथ पर विराजमान हैं! जिनके नेत्र सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि हैं; जिनका कमल जैसा मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान है। मैं आपको बारम्बार नमस्कार करता हूँ।

10. भगवान शिव और देवी शिवा को नमस्कार है, जिनके बाल उलझे हुए हैं। वे वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्त हैं। जिनकी पूजा जनार्दन और कमल-जन्मे सृष्टिकर्ता करते हैं। मैं भगवान शंकर और भगवती पार्वती को निरंतर नमस्कार करता हूँ!

11. भगवान शिव और देवी शिवा को नमस्कार है, जो कठिन समय में हमारे तत्काल सांत्वना हैं,जो दोनों विल्वपत्रऔर चमेली के फूलों से बने माला पहनते हैं, जो अपार शांति से चमकते हैं, मैं आपको बारम्बार नमस्कार करता हूँ।

12. भगवान शिव और देवी शिवा को नमस्कार है, जो सभी प्राणियों की रक्षा करते हैं। उनका हृदय हमेशा तीनों लोकों की रक्षा करने में लगा रहता है। शंकर और पार्वती को मेरा सदा प्रणाम है, जो सभी देवताओं और राक्षसों द्वारा समान रूप से पूजे जाते हैं।

13. जो मनुष्य प्रातः, मध्यान्ह और सायंकाल शिव-पार्वती की इस बारह श्लोकों वाली स्तुति का भक्तिपूर्वक पाठ करता है, वह पूर्ण सुख भोगता है, सौ वर्ष तक जीवित रहता है और अन्त में शिवलोक को प्राप्त करता है।

द्वारा,
स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम, बलुआघाट, जिला - चंदौली - वाराणसी (उत्तर प्रदेश) – 232109
Mo. No.: +91 -7607 233 230 ; Email : swamirupeshwar@gmail.com